रात्री क्लास ओम्शान्ति 20-12-67

मुरली कब मिस नहीं करनी चाहिए। बड़ा शौक होना चाहिए। सवेरे का टाईम तो फुरसत रहती ही है। अब तुम बच्चों को ईश्वरी मत मिलती हैं वह मत न आकर लेंगे तो पद क्या पावेंगे। बहुत फर्क हैं। मनुष्य मत से नर्कवासी, ईश्वरी मत से स्वर्ग वासी बनते हैं। दैवी मत वाले तो देवता ही हैं। फिर बाद में रावण मत होती हैं। मनुष्य मत अथवा मानव मत कहो जिससे मनुष्य नर्कवासी बनते हैं ईश्वरी मत से देवता बनते हैं। फिर जब देवताओं का राज्य पूरा होता हैं तो मनुष्य होते हैं। मनुष्य मत से फिर नीचे उतरते हैं। जिस मत से इतना ऊंच मर्तबा मिलता हैं उस मत पर बच्चे ध्यान नहीं देते हैं। मुरली जो मिस की हैं वह सुनना चाहिए। ईश्वर का परिवार बिलकुल सिम्पल हैं। बाप बच्चे और बच्चियां। बाकी जो भी सम्बन्ध हैं उनको तोड़ना पड़ता हैं। शादी करने से और ही सम्बन्ध बढ़ता हैं। फिर ससुर घर भी याद आने लगे। सेण-सज्जन आद सब याद आवेंगे। यहां तो सब को भूलाना हैं। सिर्फ ईश्वरी सम्बन्ध। और सब देह सहत देह के सर्व सम्बन्ध भूलाने हैं। बाबा तो सम्बन्ध आद की याद भी नही हैं। देहसहित देह के सर्व सम्बन्ध तोड़ने हैं। रावण राज्य में सम्बन्ध का बहुत परिवार होता हैं। अभी उन बहुत सम्बन्धों को तोड़ना हैं। देह भी पुरानी हैं। एक संग जोड़ना हैं, तब ऊंच पद पा सकते हैं। सम्बन्ध होगा तो अन्त वही याद आ जावेगा। बाबा पूछते हैं नारायणी नशा चढ़ा हुआ हैं। तब ऊंच पद पा सकते हैं। मौत तो सदैव सिर पर हैं ही हैं। दिन प्रति दिन सम्बन्ध तो ड़ना हैं। ज्ञान में चलने वाले बड़े खबरदार रहते हैं। देह सहित सन्यास सन्यासी कर न सके। उन्हों के लिए कायदा नहीं। उनको इस प्रकार का ज्ञान मिलता नहीं हैं। सिवाय तुम ब्राह्मणों के कोई में ईश्वरी ज्ञान हैं नहीं। कितने बड़े2 गर्वनर प्रेजिडेन्ट आद हैं। अपन को नारायण भगवान भी कहलाते हैं। बाप कहते हैं जो अपन को भगवान कहलाते हैं वह हिरण्य-कश्यप, हिरण्याक्षस हैं? तुम बच्चे मास्टर मैसेन्जर वा पैगम्बर बने हो। मैसेज देना तुम्हारा काम हैं। जो अपने कुल का होगा उनको झट जंच जावेगा। बाप के पास जाना हैं तो बेहद के बाप को याद करो तो पावन दुनिया का मालिक बन जावेंगे। पूछना चाहिए क्या चाहते हो। मुक्ति वा जीवन मुक्ति। मोक्ष होता नहीं। अब तुमको क्या चाहिए। यह तो बाप पूछते हैं। सन्यासियों से पूछना ही व्यर्थ हैं। भारत में भगवान भी बहुत हो गये हैं। यह तो बच्चे समझते हैं टाईम बहुत पड़ा हैं। बच्चे समझते हैं 8-9 वर्ष हैं। बहुतों को संदेश देना हैं? ऊंच ते ऊंच बाप का परिचय देना हैं। नीच ते नीचे हिरण्यकश्यप आद तब तो लिखा हैं थम्ब से निकल भगवान ने मारा। बाप कैसे हिंसा करेंगे। यह सब हैं गपोड़े। ब्लाईन्ड फेथ कितना हैं। भारत में भगवान हो गये ढेर के ढेर। भक्ति मार्ग की तो कमाल हैं। सब से फालोअर्स बहुत हैं आगाखान के। तो उनको समझाना चाहिए। परन्तु यह तो भगवान हैं नहीं। उनके फालोअर्स तो करोड़ों हैं। दिन प्रति दिन सा0 बहुतों को होते रहेंगे। इनकी भी अवस्था बढ़ी जावेगी कर्मातीत अवस्था को पाता जावेगा। फिर ब्रहमा का भी बहुतों को सा0 होता रहेगा। योगबल बढ़ता जावेगा ना। बहुत गुहय राज़ हैं ज्ञान के। ब्रहमा का नाम कम थोड़े ही हैं। त्रिमूर्ति ब्रहमा कह देते हैं। मनुष्य शंकर को ऊंच रखते हैं। शिव-शंकर मिला देते हैं। हैं त्रिमूर्ति ब्रहमा। ब्रहमा का ही पार्ट हैं जास्ती। ब्रहमा का कहो या विष्णु का कहो सब से जास्ती पार्ट इन दोनो का हैं। बच्चों को रोज समझाया जाता हैं स्कूल में रोज न पढ़ेंगे मुरली न सुनेंगे तो फिर अबसेन्ट पर जायेंगी। पढ़ाई की लिफ्ट तो जरूर चाहिए ना। गाडली युनिवर्सिटी में अबसेन्ट थोड़े ही होना चाहिए। पढ़ाई कितनी ऊंच हैं जिससे तुम सुखधाम के मालिक बनते हो। वहां तो अनाज आद सब फ्री रहता हैं पैसा नहीं लगता। अभी तो कितना महंगा हैं सौ वर्ष में कितना महंगा हो गया हैं। नहीं तो आगे 10 आने एक मन। अभी तो 40 रूपया मन हो गया हैं। तो उनके आगे कितनी सस्ताई होगी। वहां कोई अप्राप्त वस्तु नहीं होती हैं जिसके लिए पुरूषार्थ करना पड़े। वह हैं ही सुखधाम। तुम अभी वहां के लिए तैयारी कर रहे हो। तुम बेगर टू प्रिन्स बनते हो। शाहुकार लोग कोई अपन को बेगर नहीं समझते हैं। अच्छा ओम।